ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास साहित्य

डॉ . अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ

हिंदी विभाग प्रमुख ,

डॉ. श्री. नानासाहेब धर्माधिकारी कॉलेज , गोवे - कोलाड ,

तहसील - रोहा , जिला - रायगड , महाराष्ट्र

सारांश :

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वाधीनता आंदोलन के समय एक मात्र हिंदी भाषा ही सभी लोगों को जोड़ने वाली थी इसी समय में राष्ट्रीयता की संकुचित भावना ने लोगों को गुलाम बनाया था। १८५७ में अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की पहली लड़ाई लड़ी गई , इससे भारतीय होने का अहसास भी हो गया था. शिक्षा के माध्यम से हिंदी भाषा का विकास होने लगा। गांव में भी यह हिंदी भाषा बोलने लगे थे निम्न वर्ग भी आसानी से यह भाषा बोल रहा था इसलिए हिंदी भाषा सबकी भाषा बन गई थी। इसी भाषा में कुछ शिक्षित लोगों ने अपनी लेखनी समाज को जागृत करने का प्रयास भी किया है। हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य से समाज के विभिन्न प्रश्नों का , जंजगृति का कार्य बखूभी किया है , समाजसुधार ,अंधश्रृद्धा ,राष्ट्रीयता का भाव ,स्त्री शिक्षण , दलित शिक्षा जैसे प्रश्नों पर साहित्य लिखा गया। हिंदी भाषा में काव्य , उपन्यास ,कहानी , नाटक भी इसी समय लिखने वालों की संख्या बढ़ गई थी। जिसमे प्रमुख रूइप में थे - भारतें दू जी , दिनकर जी ,निराला जी , गुप्त जी , श्रीलाल शुक्ल जी और कुछ महिला लेखिका भी इस दौर पर लेखन कार्य किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हिंदी के उपन्यास साहित्य में भी बढ़ी क्रांति आ गई थी हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी का नाम महत्वपूर्ण माना जाता है। अंग्रेजों के सत्ताधीश होने पर उन्हें यह देश चलने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता थी फलस्वरूप उन्होंने शिक्षा का मार्ग सभी वर्गों के लिए खोल दिया था। मुद्रण का भी अविष्कार होने के कारन बहुत साडी किताबें भी पत्राकाशित होने लगी थी कुछ समाचार पत्र एवं पात्र-पत्रिका भी आर्कषित हो गई थी। आगे चलकर भारतीय साहित्यकारों ने अपनी कलम को लेकर आम जान -जीवन में राष्ट्रीयता की भावना भर देने का कार्य किया था। मैंने कुछ उपन्यासकारों के सन्दर्भ में यहाँ आलेख प्रस्तुत करने की कोशिश की है। श्रीलाल शुक्ल का रागदरबारी , यशपाल का झूठा सच , रामदरश मिश्रा का जल टूटता हुआ , प्रेमचंद का गोदान , विवेकी रे का सोना मति आदि ।

कुंजी शब्द : *स्वाधीनता आंदोलन , उपन्यास साहित्य , राष्ट्रीयता , स्वतंत्रता , संकुचित भावना , नारी विमर्श , शिक्षा निति , पत्रकारिता , मनोविज्ञान , अजनबीपन , अंधश्रृद्धा , शिल्प एवं शैली , व्यंग्यात्मकता , प्रतीकात्मकता आदि।*

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

संशोधन पद्धति :

सर्वेक्षणात्मक एवं विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धति।

संशोधन के उद्देश्य :

१] स्वाधीनता पूर्व हिंदी साहित्य की शिति को जानना।

२] स्वाधीनता के लिए जिन विभूतियों ने योगदान दिया है उनको जानना।

३] स्वाधीनता समय की सामाजिक स्थिति को जानना।

४] स्वाधीनता समय की राजनितिक स्थिति को जानना।

५] स्वाधीनता समय की धार्मिक स्थिति को जानना।

६] स्वाधीनता समय की कृषक स्थिति को जानना।

प्रस्तावना :

स्वाधीनता के बाद मूल्य विघटन की विसंगतियों को लेकर साहित्य लिखा गया था। जादात्तर उपन्यास इस विधा में इसका चित्रण मिलता है। भीष्म साहनी का तमस यह एक महत्स्वपूर्ण कृति मानी जाती है। इसी समय हिंदी उपन्यासों में परिवेश , विघटन , समाज , व्यक्ति , मनोविज्ञान का दर्शन , रचनाकारों की संवेदना , जटिलता , मोहभंग ,घुटन ,अजनबीपन , निरर्थकता आदि। आगे साहित्य में नए शिल्प तथा शैली का भी प्रयोग होने लगा। इसके कारन हिंदी उपन्यास साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया। इसमें मानव और समाज को उसके व्यापक और सर्वांगीण रूप में प्रस्तुत हो गया। सहजता के साथ प्रतीकात्मकता , बिम्बात्मकता भी दिखाई देती है। जिसमे कुछ प्रमुख उपन्यासकारों को चुना है - श्रीलाल शुक्ल का रागदरबारी , यशपाल का झूठा सच , रामदरश मिश्रा का जल टूटता हुआ , प्रेमचंद का गोदान , विवेकी रे का सोना माटी सेवासदन , नागार्जुन का बलचनमा , आदि।

श्रीलाल शुक्ल का रागदरबारी :

प्रस्तुत उपन्यास हिंदी के प्रमुख उपन्यासकार गीनपीठ पुरस्कार प्राप्त हिंदी साहित्यकर श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित प्रसिद्ध उपन्यास है। १९६८ में प्रकाशित इस उपन्यास में भारत के देहाती जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। स्वतंत्रता के बाद भारत के देहाती जीवन की मूल्यहीनता को परत-दर - परत उघाड़ कर रख देने वाला यहाँ उपन्यास है। भ्रष्टाचार , चोरी डकैती , राजनितिक संघर्ष के साथ जटिल और क्रूर व्यवस्था का चित्रण इसमें दिखाई देती है। इसके सन्दर्भ में सीमा मिश्रा लिखती है -" श्रीलाल शुक्ल जहाँ एक ओर सरलता ,सहजता ,उधारता के धनि है , वही दूसरी ओर बड़प्पन , सादगी , नम्रता ,निश्चलता तथा मधु भाषिक है। "-१ प्रस्तुत उपन्यास में यह भी बताया गया है कि आजादी मिलाने के बाद राजनितिक गन्दगी गांव में पहुँचनेसे गावों में हड़बड़ी मची है। खून , मारामारी , गन्दी राजनीती बलात्कार की स्थिति , च गई है। शक्ष मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण अंग है लेकिन शिक्षा व्यवस्था का विकृत रूप इसमें दिखाई देता है। इसके सम्बन्ध में वैद्य जी कहते है - " इस देश की शिक्षा पद्धति बिलकुल बेकार है। ..... फिर उस कॉलेज का हल नहीं जानते। लुच्चे और शहडों का अड्डा है। मास्टर पढ़ना - लिखना छोड़कर सिर्फ पॉलिटिक्स भिड़ते है। "-२

आज के युग में राष्ट्रहितकारी मुल्योन का विघटन किस तरह

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

हो रहा है इसका भी चित्रण इस उपन्यास में दिखाई देता है। सत्तालोलुपता , गुटबाजी , भाईभतीजा वाद , चाटुकारिता आदि वृत्तिओं का चित्रण है। इसके सम्बन्ध में स्वय लेखक कहते है - " एक जमाना तय किसी भी बाभन ,ठाकुर के निकलने पर वहां के लोग अपने दर्वजोंपर उठकर खड़े हो जाते थे। हुक्कों को जल्दी से जमीनपर रखा जा सकता था। चिलमें फेंक दी जाती थिओ। मर्द हाथ जोड़कर ' पायलागि महाराज' का नैरा लगते थे। औरतें बच्चों को गली से हाथ पकड़कर खिंच लेती थी और कभी -कभी घबराहट से उनके पीठपर घुसे भी बरसाने लागतिउ थी और महाराज चारों ओर आशीर्वाद लुटाते हुए और इस बात की पड़ताल करते हुए कि पिछले चार महीनों में किसकी लड़की पहले के मुकाबले जवान दिखने लगी और कौनसी लड़की ससुराल से वापस आ गई है। त्रेतायुग की तरह वातावरण पर सवारी गांठते निकल जाते थे। " -३

रागदरबारी एक क्रन्तिकारी उपन्यास भी है क्योंकि वह पूरी व्यवस्थ्य के प्रति घृणा पैदा करता है। रागदरबारी रत में गया जानेवाला राग है। अंधेरेपन की भयावहता को दूर करने और सुखद सुबह और नै किरण का आह्वान करता है। इस प्रकार रागदरबारी में सजग एवं दृष्टि संपन्न रचनाकार की तरह जीवन में व्याप्त विडम्बनाओं को न सिर्फ चित्रित किया है , बल्कि उनके माध्यम से उन विसंगतिओं को दूर करने की सजग दृष्टि और प्रेरणा भी दी है।

यशपाल का झूठा सच :

यशपाल का यह प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है। यह दो भागों में विभाजित उपन्यास है एक -देश और वतन दूसरा देश का भविष्य। राजनितिक , सामाजिक और ऐतिहासिक रूप में हमारे सामने खड़ा होता है। डॉ सुरेश सिन्हा इस उपन्यास के मूल उद्देश्य को लेकर लिखते है -" शोषण ,अन्याय एवं सामंती व्यवस्था के हथकंडे चित्रित करने एवं राजनितिक नेताओं के स्वार्थ को चित्रित करने ,समाज में प्रगतिशील एवं समानता ,आर्थिक शोषण की समाप्ति ,उत्पादनपर सामान अधिकार ,वर्ग में मनुष्य का समूल नाश तथा विकास करने का सबको सामान अवसर ,विवाह सम्बन्धी स्वतंत्रता एवं सामाजिक क्रांति का प्रसार जिससे वर्तमान की रूढ़ियाँ विभिन्न हो सके तथा प्रगतिशील मानवता का प्रसार हो सके इस उपन्यास का मूल उद्देश्य है। " -४

भारत में लोकतंत्र दलित तंत्र का पर्याय बन गया है। कांग्रेस की सत्तालोलुपता अवसरवादी व्यवहार , भाई - भतीजावाद आदि बुरी करतूतों पर लेखक ने व्यंग्य किया है। मार्क्सवादी सिद्धांत का समावेश इसमें दिखाई देता है। इसके सम्बन्ध में डॉ स्वर्णलता लिखते है -" लेखक ने मार्क्सवाद के वैज्ञानिक विचार दर्शन को उपन्यास कला में डालने का सफल प्रयास किया है। " - ५

झूठा -सच इस उपन्यास में यशपाल जी ने परिवार नियोजन पर ध्यान आकृष्ट किया है। छोटा परिवार ही सुखी ,समृद्ध हो सकता है , बड़ा परिवार समस्याग्रस्त हो जाता है। इसके सम्बंद में मर्सी एक में माथुर और तारा के सम्मुख अपने विचारफ प्रस्तुत कराती है- " इस ज़माने में कितने लोग चार -पांच बाहों का वरदान चाहते है इतने बच्चों के लिए स्वस्थ्य ,भोजन और उचित शिक्षा का प्रबंध कर सकते है ? उन सब की जिंदगी नरक बन जाएगी। क्या उनके लिए अवांछित गर्भ बच्चे जीवन भर की बीमारी नहीं है ? माथुर मार्शी को उत्तर देता है ,यह तो परिवारों की स्थिति और लोगों के विचारों के अनुसार

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

उनका नितांत निजी प्रश्न है। हाँ निम्न आर्थिक स्थिति और जनसँख्या के बोझ से दबे देशों में यह प्रश्न राष्ट्रिय समस्या भी हो सकता है। "-६

उपन्यासों में कृषक और स्वाधीनता आंदोलन :-

हिंदी उपन्यास साहित्य में किसान जीवन का चित्रण बखूबी मात्रा में हुआ है। किसानों की दयनीयता , शोषण ,घुटन का चित्रण अधिक है। किसानों की गरीबी का मूल बेकरी ,कृषि की काम आय से ऋणग्रस्त किसानों की आत्महत्या आदि। हिंदी साहित्य के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के साहित्य का केन्द्रबिन्दू ही किसान रहा है। सेवासदन , प्रेमाश्रम ,गोदान ,गबन और कर्मभूमि में किसान विमर्श दिखाई देता है। प्रेमचंद और उनका युग में डॉ रामविलास शर्मा लिखते है - ' उन्होंने उस धड़कनो को सुना जो करोड़ों किसानो के दिल में हो रही थी। उन्होंने उस अछूते यथार्थ को अपना कथा विषय बनाया। " - ७

भारतीय किसान शोषित , निरक्षर ,दरिद्री का शिकारी हो गया है। यही यथार्थ प्रेमचंद जी के उपन्यासों में दिखाई देता है। नागार्जुन का बलचनमा भी इस किसान विमर्श को चित्रित करता है। जैसे - " बलचनमा के पिता की मृत्यु होने पर उनके क्रियाक्रम रन के पैसे से ही से होते है। " -८ यह दरिद्रता उनके कर्ज ही है। यह सब गरीबी का ही परिणाम है। जिससे खलिहान में अन्न होने पर भी किसी के चहरे पर ख़ुशी की झलक नहीं दिखाई देती है। कौंकि किसान ऋणी होकर जीता है और मृत्यु के बाद भी अपने पुत्रों को ऋणी करता जाता है। हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार रामदरश मिश्र के उपन्यासों में भी यही किसान की स्थिति दिखाई देती है - " सतीश के पिताजी बेटी के शादी के लिए दीनदयाल पांच सौ कर्ज लेते है ,जो बढाकर १५०० हो जाता है। "- ९

मैला अंचल के रचनाकार फणीश्वरनाथ रेनू जी ने भी किसान जीवन पर यह उपन्यास लिखा है। इस उपन्यास में जमींदारों द्वारा किसानों के ऊपर किय जानेवाले अत्याचारों का एवं शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। तहसीलदार डव आरा किसानों का शोषण दिखाई देता है। जैसे - मजदूरों की गरीबी का जमींदार लोग फायदा उठाते है। फागुन के पर्व - त्यौहारों के पांच दिन पहले उनके बखर के मुँह खोले दिय जाते है ..... बदरदास को एक मन। .....सजाय तनय को तीन पसेरी। "-१०

ग्रामीण साहित्य के प्रसिद्ध रचनाकार विवेकी रॉय द्वारा रचित साहित्य पूरा ग्रामीण किसान तथा मजदूरों का ही छत्रं करता है। उनके साहित्य का मूल ही किसान समस्या है। उनकी प्रसिद्ध रचना सोना मति यह किसान जीवन का यथार्थ चित्रण करता है। प्रस्तुत उपन्यास सोना मति में विवेकी रॉय ने गांव के नेता , सरकारी अफसर तथा पुलिस के अत्याचार का चित्रण है जो किसान को हमेशा मजदूर ही बनाया है उनका शोषण किया है। वे सब किसान तथा कमजदूरों को हमेशा लुटाते रहते है। सर्कार की ओर से मिलनेवाली सहायता नेता ही हड़प कर लेता है। नेता घुस लेकर ही पैसा कमाता है। इसका यथार्थ चित्रण विवेकी रॉय करते है जैसे - " सर्कार गरीबों को दुधारू पशु बाँट रही है कि उसकी दीन दशा फायर। तो , गरीबों की दशा बदलते- बदलते कितने अमीरों की बदल जाती है। "-११

गांववालों की नजर में भैंस सरकारी पशु हो गई है। उसके समाजवादी दूध से गरीब जनता ही क्यों गरीब सरकारी अधिकारी ,कर्मचारी अभिसंचबट होने लगे है। इस प्रकार उपर्युक्त सभी उपन्यासों में किसान की दशा का चित्रण मिलता

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन के अनुरूप हम निष्कर्ष के साथ कह सकते है की भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के योगदान में हिंदी का समग्र साहित्य दिखाई देता है। १८५७ से लेकर भारत के कई साहित्यकारों ने भारत के यथार्थ का चित्रण करने की कोशिश की है। श्रीलाल शुक्ल से लेकर प्रेमचं जी तक नागार्जुन से लेकर विवेकी रॉय तक जितने भी यूपाण्यास लिखे गए है उन सभी उपन्यासों में किसान का यथार्थज चित्रण मिलता है। राजनीती का ,सामाजिकता का चित्रण भी तथा मार्क्सवाद का यथर्थ चित्रण यशपाल के झूठा सच में दिखाई देता है। आज भी इस विमर्श की आवश्यकता है। आजादी के ७६ साल होकर भी हमारा किसान खुदकशी कर रहा है यह भारत के लिए बुरी स्थिति है। स्वाधीनता आंदोलन में साहित्यकारों का योगदान अधिक मात्रा में दिखाई देता है इसमें कोई शक नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१] श्रीलाल शुक्ल - रागदरबारी -पृ . २१

२] वही पृ . २५०

३] वही पृ . २७

४] डॉ. सुरेश सिन्हा - हिंदी उपन्यास -पृ . २२०

५] डॉ.स्वर्णलता - स्वतंत्रोत्तर हिंदी उपन्यास की पृष्टभूमि - पृ. २७२

६] यशपाल - झूठा सच -पृ .३७०

७] डॉ . रामविलास शर्मा - प्रेमचंद और उनका युग -पृ . ८०

८] नागार्जुन - बलचनमा - पृ . ०३

९] राम दरश मिश्र - जल टूटता हुआ - पृ . ४०

१०] फणीश्वरनाथ रेनू - मैला अंचल -पृ . १००

११] विवेकी रॉय - सोना माटी पृ . ३३४

Cite This Article:

डॉ . अमलपुरे स. व. (2024). भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास साहित्य, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 1–5) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646426